Ex-tra An Organisation

(Experimental Theatre in Realistic Attitude)

Annual report

2013-14

Working and correspondence Address: C/O Ajeet Bahadur, 950/625, Mutthiganj
Allahabad, Uttar Pradesh-211003

Mo: +91 8127254051, +91 9452401478, +91 9695907532

E-mail: extraanorganization@yahoo.com

https://extranorg.wordpress.com

अनुक्रम

संस्था परिचय	3
दृष्टिकोण एवं लक्ष्य	4
उद्देश्य एवं कार्यनीतियाँ	5
वर्ष 2013 -14 कार्यों का संक्षिप्त परिचय एवं 2014-15 का एक्शन योजना	6
अप्रैल – जून 2013-14	7
जुलाई – सितम्बर 2013-14	8-11
अक्टोबर –दिसम्बर 2013-14	12
जनवरी –मार्च 2013-14	13
वर्ष 2013-14 की चुनौतियाँ एवं सीख	14
वर्ष 2013-14 के संस्था सदस्यों कि सूची	15
वर्ष 2014-15 की एक्शन योजना का संक्षिप्त परिचय (अप्रैल-2014-मार्च -2015)	16

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन

(एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड)

परिचय :

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) की नींव कई वर्षों के सघन चर्चा एवं विचारों के संघर्षों से गुज़रते हुए सन 2002 के 23 जनवरी को कलकत्ता में रखी गयी । संस्था की नींव कि सिचाई में कला एवं रंगमंच कार्यकर्ता, रिक्शा चालक रंगकर्मी साथी –इलाहाबाद, बूट मरम्मत कर्ता रंगकर्मी साथी-कोलकाता एवं रवीद्र भारती विश्वविध्यालय –कोलकाता और भारतेन्दु नाव्य एकेडमी-लखनऊ में अध्ययनरत छात्र रहे हैं । संस्था में शुरू से ही विविध प्रतिभाओं का स्थान रहा है। एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) अपने विज़न *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार"* की संकल्पना के साथ वचनबद्ध रहा है ।

संस्था अपने विज़न की ओर बढने और इसकी प्राप्ति के लिए कला और संस्कृतियों की विविधिता से आभूषित भारत के पारंपरिक कला और यहाँ की संस्कृतियों के आधार पर रंगमंच के नए सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमान रचने में इसके शोध और खोज में लगातार व्यस्त रहता आ रहा है । इस रंगमंचीय प्रतिमान को समाज में स्थापित करने के लिए हम निरंतर हमारी प्रक्रियामयी प्रस्तुतियों से दर्शक और अभिनेता के बीच की दूरियों को लगातार कम करने की कोशिश में हैं । क्योंकि हमें ऐसा लगता है कि किसी नाटक का उत्पाद मात्र से नहीं बल्कि नाटक और रंगमंच के अंदर व्याप्त जीवन मुखी शाश्वत प्रक्रियाएँ हमें हमारे विज़न *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार"* तक पहुंचा सकेंगी ।

संस्था के मुख्य नाटक जिनकी प्रस्तुति अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में हुई हैं, जैसे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'हवालात' का मंचन राष्ट्रीय नाव्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2009, अंतोन चेखोव द्वारा लिखित कहानी 'टेढ़ा दर्पण' का मंचन राष्ट्रीय नाव्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2010 तथा नेशनल थिएटर फेस्टिवल-केरला -2010 में, एवं धर्मवीर भारती द्वारा लिखित उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोडा' का मंचन राष्ट्रीय नाव्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2011 दिल्ली एवं चेन्नई भारत रंग महोत्सव में हुए हैं । इसके साथ ही साथ संस्था देश के अलग-अलग हिस्सों राजस्थान, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश में रंगमंच की टोलियों का निर्माण और कार्य भी कर रही है । संस्था राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने हेतु नई दिल्ली से सन् 2007 के 27 दिसम्बर को एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन' के नाम से रजिस्टर किया गया है ।

दृष्टिकोण :

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन का यह मानना है कि भारत की पारंपरिक रंगमंच एवं लोक शैलियों का शोध कर नए अभिनय शैलियों और नाट्य शैलियों के साथ नए सौदर्यशास्त्रीय प्रक्रियाओं का निर्माण करना । यह सौदर्यशास्त्रीय प्रतिमान हमारे विज़न की प्राप्ति का निर्मित होता मार्ग है । इस मार्ग के निर्माण के लिए राष्ट्रीय और इच्छुक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और रंगकर्मियों तक हमें अपने प्रक्रिया रंगमंच विधियों के साथ पहुँचना और इनका प्रस्तुति परक प्रसार । इस प्रसार के लिए हम अलग –अलग राज्यों के नाट्य एवं कला दलों तथा पारंपरिक संगीत टोलियों तक पहुँच रहे हैं जैसे : बीकानेर , राजस्थान में जन जागृति संस्था जो की एक नाट्य संस्था है , पश्चिम बंगाल के हुगली में आर्ट फ़ाउंडेशन ऑफ द एरा एवं जयपुर के दृश्य कला समूह अरविद स्टुडियो,सोडाला तथा बीकानेर के सुफी संगीत गायकों के साथ मिल कर हम अपने विज़न को साझा कर रहे हैं, ताकि हम सब के इस विज़न *“संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार”* के गठन की यात्रा में कला अपने कार्यवाहकों के साथ क्रियात्मक आएं ।

लक्ष्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने विज़न *“संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निर्माण में रंगमंच कला क्रिया का विस्तार”* कि प्राप्ति के लिए निम्न लक्ष्यों की ओर बढ़ रही है जो की इस प्रकार हैं । विज़न के अनुरूप एक ऐसा रूप विषयक (मॉडल) सामुदायिक स्तर पर “बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम” का निर्माण आगामी 2020 तक करना चाहती है । संवेदनशील ,लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निरंतर निर्माण के लिए जहां रंगमंच कला में निरंतर प्रयोग और उनका स्थापन होता रहेगा। इसके लिए भावी वर्तमान और आगंतुक पीढ़ियों के साथ इस प्रक्रिया का स्थापन हमें अतिआवश्यक महसुस होता रहा है । लक्ष्यों के कुछ निम्न बिन्दु इस प्रकार हैं:

- सामुदायिक स्तर पर “बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम” का निर्माण के लिए बंजर भू-खंड खोजना और स्थानीय अथवा राज्य स्तरीय प्रशासनों से चर्चा करना ।
- सामुदायिक स्तर पर “बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम” का निर्माण करना ।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहूद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम के निर्माण के लि ए चर्चाएँ चलाना ।
- “बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम” मॉडल के स्थापना के साथ ही साथ इसका सामुदायिक स्तर पर अन्य राज्यों में विस्तार करना ।

उद्देश्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने विज़न तक पहुँचने के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है । उसके लिए रंगमंच कला के क्षेत्र में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यरत है ।

- स्थानीय एवं अन्य राज्यीय कला एवं रंगकर्मियों तक पहुँचना ।
- अंतर्राष्ट्रीय रंगकर्मियों से निरंतर संवाद एवं अपने रंग-विधियों एवं विचारों पर साझा समझ बनाना ।
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाओं के तहत स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर रंगकर्मियों का निर्माण करना ।
- ज़्यादा से ज़्यादा दर्शकों तक पहुँचना और उनकी वैचारिक भागीदारी सुनिश्चित करना ।

कार्यनीतियां :

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने विज़न के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है ।

उसके लिए रंगमंच के क्षेत्र में उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्न कार्यनीतियों पर कार्यरत है :

- संस्था के नाट्य प्रक्रिया प्रस्तुतियों का निर्माण उभर रहे निर्देशकों के द्वारा
- नाट्य उत्सवों में भागीदारी
- नाट्य उत्सवों का आयोजन
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाएँ
- दर्शक-अभिनेता संवाद
- रंगमंच एवं समाज पर स्थानीय वाकपीठों का आयोजन
- “रंगमंच कला कि अस्मिताएँ” मुद्दे पर चरणवार सम्मेलन

वर्ष 2013-14 कि योजना का संक्षिप्त विवरण (अप्रैल-2013-मार्च -2014)

अप्रैल-2013 से मार्च -2014 में संस्था ***मुख्य रूप से दो नए नाटकों का निर्माण किया गया ।*** जिसमें नाटक डैडलॉक को निर्माणिक कार्यशाला के तहत तैयार कर कई उत्सवों के लिए आवेदन किया गया। दूसरे नाटक पुनर्जन्म कि तैयारी कि गयी ।

अभिनेताओं के क्षमतावर्धन हेतु "शिक्षा / कला में अंग संचालन कि भूमिका" रबीन्द्र नाथ टैगोर के 'शिक्षा दर्शन' को आधार बना कर त्रिमासीय शैक्षणिक व लघु प्रस्तुति परख कार्यशाला का आयोजन इलाहाबाद में किया गया।

इसी के साथ इटली से आई हुई संस्था के सदस्यों के साथ संस्था ने नाटक एंटीगोनी पर इम्प्रोवाइज़ पर कार्य किया। संस्था के आस-पास के बच्चों कि रंगटोली बनाने हेतु प्रया स किया गया। जिसका निरंतर अभ्यास व प्रस्तुतियाँ संस्था के अभ्यास स्थल पर होता रहा है । माह **अक्टोबर में संस्कृति मंत्रालय के मिनट्स से सूचना मिली कि संस्था का चयन 05 कलाकारों व 0 1 गुरु के साथ सैलरी ग्रांट में किया गया है ।** इस सूचना का काफी ऊर्जामयी प्रभाव संस्था के सदस्यों में देखने को मिला ।

आशुतोष पोद्दार के मराठी नाटक "पुलाखाल्चा बोम्ब्ल्या मारुति" का हिन्दी अनुवाद शुरू किया गया एवं आगामी इस नाटक कि तैयारी फ्लेम कैम्पस –पुणे व इलाहाबाद तय किया जाना है । इस बाबत संस्था अभी कार्य योजना पर मंथन कर रही है ।

वर्ष 2014-15 कि एक्शन योजना का संक्षिप्त परिचय (अप्रैल-2014-मार्च -2015)

इस बार के वार्षिक कलेंडर में हम मुख्य रूप से चार हाई इंटेन्सिटी कार्यक्रम को योजना में रख पाये हैं। **इस योजना में तीन नए नाटको का निर्माण, प्रस्तुति व नाट्य उत्सव का आयोजन शामिल है ।** जिसमें से नाटक –"डैडलॉक सीक्रेट" का नाट्य निर्माण एवं इलाहाबाद और राजस्थान में प्रस्तुति। कोइवल्य प्लेस के साथ तत्वाधान में दिल्ली के हाबीटाट सेंटर में उदय प्रकाश की बहुचर्चित "राम सजीवन की प्रेमकथा" का श्रुति नाट्य मंचन । जवाहर कला केंद्र,जयपुर के तत्वाधान में पीयूष मिश्रा द्वारा लिखित नाटक "गगन दमामा बाज्यो" की प्रस्तुति रंगायन प्रेक्षागृह जयपुर –राजस्थान में किया जाना तय है ।

संस्था सदस्यों के क्षमतावर्धन हेतु प्रथम चरण के लिए कलकत्ता में मूकाभिनय कि लंबी कार्यशाला के आयोजन में प्रतिभागी के रूप में हिस्सेदारी इससे संस्था के आगामी प्रक्रियात्मक प्रस्तुतियों में सदस्यों द्वारा उनकी प्रतिभा का उपयोग एवं प्रयोग करने के मार्ग खोलना ।

अभिनेता समूह कि शैक्षणिक क्षमता वर्धन कार्यशाला

इस वर्ष कि कार्य योजना कि शुरुआत में " शिक्षा / कला में अंग संचालन कि भूमिका" रबीन्द्र नाथ टैगोर के 'शिक्षा दर्शन' के अध्याय से लिया गया एक हिस्सा है। जिसमें एल . के . अलम्हर्स्ट रबीन्द्र नाथ टैगोर से स्कूल निर्माण पर बात कर रहे हैं। इस बात –चीत के दौरान रबीन्द्र नाथ टैगोर के उत्पन्न विचार पर आधारित लेख अंश को आधार बना कर संस्था ने अभिनेता समूह के क्षमता वर्धन कि शैक्षणिक कार्यशाला का आयोजन किया ।

इस कार्यशाला में उपर्युक्त लेख को आधार बना कर "शिक्षा / कला में अंग संचालन कि भूमिका" पर सत्र चलाये गए । इन सत्रों में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तन्मयता पर आधारित मनोविज्ञान को साझा किया गया । जहां से अभिनेता के अभिनय और इसमें होने वाले चरित्रों के मनोविज्ञान को ग्रहण करने एवं उपस्थापित करने हेतु कई विधियों को भी जाना गया । जैसे द्वैतवाद, प्रकार्यवाद व अन्तः क्रियावाद में भूमिका ग्रहण के सिद्धांतों को अभिनेताओं ने अपने –अपने स्वयं के घटनायों का फ़िक्शन इम्प्रोवाइज़ किया । यह निम्न कार्यशाला संस्था के अपने नए कार्यालय व अभ्यास स्थल पर चलाया गया ।

यह कार्यशाला अप्रैल -2013 के दिनांक 16 से माह जून के 17 तारीख तक चलायी गयी ।

माह

अप्रैल

से

जून

नाट्य निर्माण कार्यशाला

नाट्य निर्माण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 4 जुलाई से 20 सितम्बर - 2013 तक चलायी गयी । यह नाट्य निर्माण कार्यशाला संस्था कि उच्च कार्यशालाओं में रही है । क्यूंकि इस नाटक में संभागी अभिनेताओं ने स्वयं के वास्तविक जीवन अनुभव के आधार पर अपना-अपना दृश्य लिखा एवं इसकी प्रस्तावना भी अभिनेता समूह ने स्वयं ही बनाई । इस नाटक कथा सामग्री के लिए हमारे पास अब अभिनेताओं कि अपनी घटना थी । जिस पर उन्होने दृश्य लिखे इसी के साथ कुछ कोटेशन भी हमारी नज़र में पड़े जिसमें से दो कोटेशन का इस नाटक निर्माण प्रक्रिया में उपयोग भी किया गया है । इन कोटेशन के संदर्भों को नाटक के रेशनल में स्थान भी दिया गया है । जो इस प्रकार से रहा है:

Deadlock

"What profit has man of all his labour wherein he laboureth under the sun? One generation passeth away, and another generation cometh; but the earth abideth forever. . . . The sun also ariseth, and the sun goeth down, and hasteth to the place where he arose." .Ecclesiastes

"Deprive the average human being of his life-lie, and you rob Him of his happiness."- Henrik Ibsen

Rationale of the Play:

It is commonly understood that the journey of mankind through time and space has been primarily governed by need and instinct. The entire rhetoric of development and progress is propagated and legitimised under the garb of need and necessity. A closer examination of human civilisation as it stands today reveals far more subtle and complex forces at work in many social institutions. Descartes assertion 'I think, therefore I am' holds a

2013-14

माह जुलाई से सितम्बर

crucial key to comprehending the complexities of modern civilisation. The world around us, the world that we have constructed is not just about our basic needs. It is more of a product of what we have thought and what we think and these thoughts have never been entirely harmonious, in fact their sources have been oppositional in nature. On one side the desire to make life easier, safer and better for mankind and on the other the desire to enslave and exploit nature, to homogenise human societies and to subjugate them to rule have governed our civilisations.

Industrial revolution turned out to be one of major landmark in the history of modern civilisation. Most of the blessings and the curses of modern civilisation have their roots in industrial revolution that has moved on rapidly and has acquired an unprecedented momentum in this era of globalisation. The world has become a much closer space where one space resembles another what T.S. Eliot called 'Unreal city', New York, Paris, London or Mumbai resemble similar concrete jungles. While the world constructed by mankind grows in size and magnitude humanity shrinks reducing individuals to mere cogs in the giant

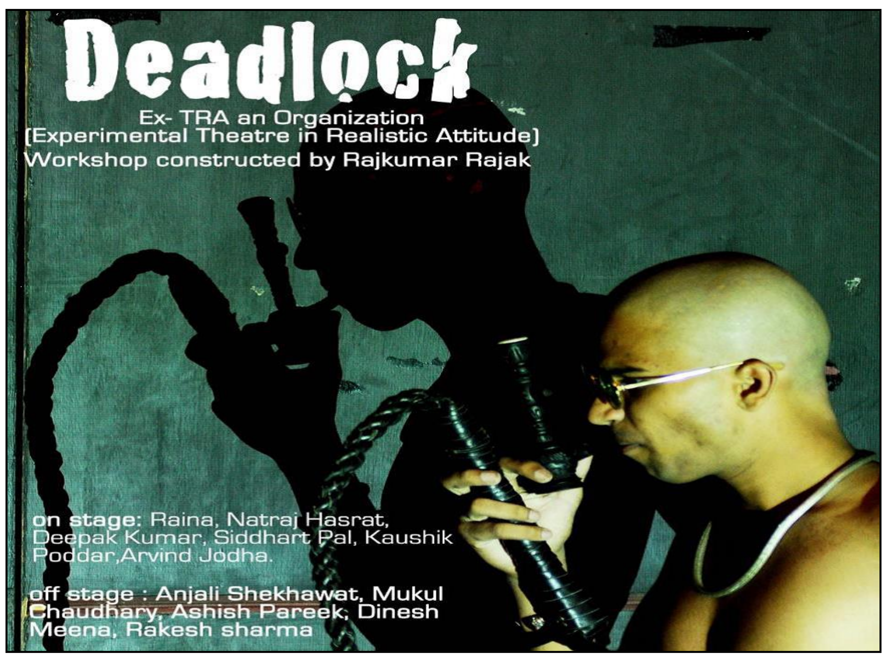

Wheel of the Metropolises. Ironically the instruments that mankind created to enslave the world appear to have enslaved mankind in turn.

Urbanisation, mechanisation and technology have created a virtual world where human societies in social institution appear to be closer than ever before but in reality this illusion of nearness has created huge distances and threatening vacuums at all levels of human relationships. It is no longer about our basic needs it is more about the needs created artificially by Capitalism driven Consumerism. We apparently have a freedom to choose but we don't have the freedom to 'not to choose.' Caught up in the trap humanity is fast losing its identity. The mad race for materialistic acquisitions has taken a heavy toll on individuals, families and societies. Locked up in 'self-prisons' we are fast losing our ability to reach out and connect with others. Fast disintegrating relationships, families and societies are its outcome. We seem to be engulfed in an all pervasive darkness and blankness groping our ways in the endless caverns of illusory ambitions and desires.

In every era and in every society there have been people for whom the reality of the world around them was too much to bear and they found different escapes in arts, in bohemianism, in spiritualism and in other countless modes. This escapism has come to its peak in the contemporary world. It is no longer the question of a few individuals seeking escape but the whole world appears to be in a great rush to escape from the physical into the virtual world. What we see as escape is the ultimate prison we have created for ourselves, the deadlock that apparently offers countless paths but paths that lead nowhere except to themselves.

The biggest question we face today is to find a way out of this deadlock and its frightening tentacles. It has pushed us into aphasia where words remain stuck in our throats and never

find their way out. The survival of humanity depends upon the fact that our words find their way out into expression, into the establishment of dialogue. The blankness that engulfs us from within an outside can only be countered through speaking out and through reaching out to the others around us. Continual dialogue is that essential bridge that can take us across divides, across the wide blank spaces that have emerged within individuals, families and societies. Through dialogue we may successfully ensure the creation of an environment and a space where healthy societies may thrive right from small villages and hamlets to towns, cities and metropolises.

नाट्य निर्माण के उपरांत इस नाटक के नाम करण हेतु काफी कठिनाई आई । तब राजस्थान विश्वविध्यालय, जयपुर में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत अविनाश जी को यह नाटक जयपुर के अरविंद स्टूडिओज में दिखाया गया एवं उन्होने इस नाटक का नाम 'डैडलॉक' सुझाया एवं समूह की सहमति से इस नाटक नाम 'डैडलॉक' रखा गया । इस नाटक कि नाट्य प्रक्रिया दो स्थानो को मिलाकर हुई । जुलाई और अगस्त माह में जयपुर में इसकी प्रक्रिया चलायी गयी । तत्पश्चात इलाहाबाद में , इस नाट्य निर्माण प्रक्रिया में संस्था के कुल 9 अभिनेता और 4 सहायक टेक्निशीयन शामिल रहे । नाटक डैडलॉक कि प्रस्तुति सितम्बर में दिनांक 28 तारीख को अरविंद स्टूडिओज-सोडाला, जयपुर में और संस्था के स्वयं के इंटीमेट मंच इलाहाबाद में की गयी ।

नाटक कि प्रस्तुति को यूट्यूब पर इस लिंक के माध्यम से देखा जा सकता है :

https://www.youtube.com/watch?v=kflCbORVlH4

https://www.youtube.com/watch?v=6WbGbEaHV_0

इस वर्ष के दूसरे नाटक निर्माण कार्यशाला में तैयार प्रस्तुति "पुनर्जन्म"

इस वर्ष के दूसरे नाटक निर्माण कार्यशाला में तैयार प्रस्तुति "पुनर्जन्म" तैयार किया गया। यह कार्यशाला दिनांक 28 ओक्टोबर से 23 दिसम्बर तक चलायी गयी । इस नाटक को बांग्ला से हिन्दी में रूपांतरित किया गया। मूल लेख सेलिम अल दिन के 'जुवती कन्या' से अंश लिए गए एवं हिन्दी में इसका नाम "पुनर्जन्म" रखा गया ।

इस नाटक प्रस्तुति में कुल 8 अभिनेताओं का समूह शामिल रहा एवं इस नाटक कि प्रस्तुति संस्था के नवीन कार्यालय पर दिनांक 30 दिसम्बर को की गयी। रंगकर्मी अरिजित और सुकमल मित्रा के अनुरोध पर नाटक पुनर्जन्म कि प्रस्तुति कलकत्ता के दम-दम रेलवे स्टेशन के बाहर मैदान के खुले हिस्से में दिनांक 5 जनवरी -2014 किया गया।

संस्कृति मंत्रालय से सैलरी ग्रांट के चयन की सूचना

माह अक्टोबर में ही संस्कृति मंत्रालय के मिनट्स से सूचना मिली कि संस्था का चयन 05 कलाकारों व 01 गुरु के साथ सैलरी ग्रांट में किया गया है । इस सूचना का काफी ऊर्जामयी प्रभाव संस्था के सदस्यों में देखने को मिला । एवं इस ग्रांट से संस्था अपने कार्यो को और भी अधिक सुदृढ़ बना पाने में सक्षम हो सकेगी ।

माह ओक्टोबर से दिसम्बर

एंटीगोनी पर इम्प्रोवाइज़ पर कार्य किया

इटली की संस्था इन्स्टाविली वागन्ती थिएटरले के दो अभिनेताओं से कोलकाता में परिचय हुआ । उन्होने अपना प्रस्ताव रखा कि वो हमें कुछ अभ्यास करना चाहते है । हमारे लिए भी यह बहुत अच्छा अवसर रहा कि आन्द्रेया और पेनेलोपा के अनुभवों से हमारी संस्था के सदस्यों को भी एक्स्पोजर मिल सका ।

अतः दोनों रंगकर्मी मित्रों ने इलाहाबाद में माह जनवरी के 17 तारीख से 30 तारीख तक अभ्यास करवाया । इस अभ्यास कार्यशाला में उन्होने कामेदिया दे लार्ते को विस्तृत रूप से अभिनेताओं के साथ साझा किया । सभी संभागियों ने मिल कर सोफ़ोक़लीज़ के नाटक एंटीगोनी पर इम्प्रोवाइज़ पर कार्य किया।

बच्चों कि रंगटोली

संस्था के आस-पडोस के बच्चों को इकट्ठा कर बच्चों कि एक रंगटोली बनाने हेतु प्रयास किया गया। जिसका निरंतर अभ्यास व प्रस्तुतियाँ संस्था के अभ्यास स्थल पर होता है। 12 बच्चों का यह समूह 08 वर्ष से लगभग 17 वर्ष तक का है । इस समूह के साथ समय –समय पर अभ्यास कार्य चल रहा है ।

मराठी नाटक “पुलाखाल्चा बोम्ब्ल्या मारुति” का हिन्दी अनुवाद

आशुतोष पोत्द्दार के मराठी नाटक “पुलाखाल्चा बोम्ब्ल्या मारुति” का हिन्दी अनुवाद शुरू किया गया एवं आगामी दिनों में इस नाटक कि तैयारी फ्लेम कैम्पस –पुणे व इलाहाबाद तय किया जाना है । इस बाबत संस्था अभी कार्य योजना बना रही है ।

माह

जनवरी

से

मार्च

वर्ष 2013-14 की चुनौतियाँ एवं सीख

वर्ष 2013-14 में मुख्य चुनौतियाँ निम्न रही हैं :

- संस्था के पुराने कार्यालय का मकान मालिक द्वारा विक्रय करना ।
- संस्था के स्वयं का उपकरण न होना जैसे कैमरा आदि ।
- वीडियो –फोटो दस्तावेजों का समय-समय पर न हो पाना ।
- संस्था में अभिनेताओं कि संख्या का कम होना ।

वर्ष 2013-14 में मुख्य लर्निंग्स निम्न रही हैं :

- दस्तावेजों को योजना अनुसार बनाना एवं संजोना
- अभिनेताओं के साथ रंगकला के अभ्यासों के साथ-साथ शैक्षणिक कार्यों को भी आगे बढ़ाना ।
- संस्था में रंगकला, मनोविज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के विविध विषयों पर समय-समय पर क्षमता वर्धन को कार्य योजना में रखना ।

वर्ष 2013-14 के संस्था सदस्यों कि सूची

क्रम संख्या	नाम	लिग	क्षेत्र
1.	**अजीत बहादुर**	पु.	कलात्मक निर्देशक एवं अभिनेता
2.	**अरविद् जोधा**	पु .	कला संयोजक एवं अभिनेता
3.	**नटराज हसरत**	पु .	अभिनेता
4.	**रायना राहा**	म .	अभिनेत्री
5.	**विरभान कौल**	पु.	अभिनेता
6.	**अंजली शेखावत**	म.	अभिनेत्री एवं डिजिटल एडिटर
7.	**राजकुमार रजक**	पु .	कलात्मक निर्देशक
8.	**कौशिक पोद्दार**	पु .	कोरियोग्राफर एवं अभिनेता
9.	**अरिजित सेन**	पु .	अभिनेता
10.	**आरती बेदी**	म .	अभिनेत्री
11.	**मेघराज सैनी**	पु .	अभिनेता
12.	**चौथमल सैनी**	पु .	अभिनेता एवं संगीतकार
13.	**नरेंद्र सिह राव**	पु .	रंग शोधकर्ता एवं अभिनेता

वर्ष 2014-15 की एक्शन योजना का संक्षिप्त परिचय (अप्रैल-2014-मार्च -2015)

वर्ष 2013-14 के अनुभवों के आधार पर इस बार के आगामी वार्षिक 2014-15 के कैलेण्डर में हम मुख्य रूप से चार हाई इंटेन्सिटी कार्यक्रम को योजना में रख पाये हैं। **इस योजना में तीन नए नाटको का निर्माण, प्रस्तुति व नाट्य उत्सव का आयोजन शामिल है ।** जिसमें से नाटक –"डैडलॉक सीक्रेट" का नाट्य निर्माण एवं इलाहाबाद और राजस्थान में प्रस्तुति। कोइवल्य प्लेस के साथ तत्वाधान में दिल्ली के हाबीटाट सेंटर में उदय प्रकाश की बहुचर्चित "राम सजीवन की प्रेमकथा" का श्रुति नाट्य मंचन । जवाहर कला केंद्र,जयपुर के तत्वाधान में पीयूष मिश्रा द्वारा लिखित नाटक "गगन दमामा बाज्यो" की प्रस्तुति रंगायन प्रेक्षागृह जयपुर – राजस्थान में किया गया है ।

संस्था सदस्यों के क्षमतावर्धन हेतु प्रथम चरण के लिए कलकत्ता में मूकाभिनय हेतु एक माह कि लंबी कार्यशाला के आयोजन में प्रतिभागी के रूप में हिस्सेदारी । इससे संस्था के आगामी प्रक्रियात्मक प्रस्तुतियों में सदस्यों द्वारा उनकी प्रतिभा का उपयोग एवं प्रयोग करने के मार्ग खोलना ।

रिपोर्ट प्रस्तुतकर्ता

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन

Working and correspondence Address:

C/O Ajeet Bahadur, 950/625, Mutthiganj, Allahabad,

Uttar Pradesh-211003

Mo: +91 8127254051, +91 9452401478, +91 9695907532

E-mail: extraanorganization@yahoo.com